बढ़ौतरी और जागृति

कलीसिया की बढ़ौतरी और जागृतिः पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ -

कक्षा #१:

I. कलीसिया की बढ़ौतरीः
   क. पाठ्यक्रम परिचय।
   ख. मुख्य परिभाषाएं।
   ग. प्रेरितों के काम की पुस्तक में कलीसिया की बढ़ौतरी।

कक्षा #२:

I. कलीसिया की बढ़ौत्तरी: (जारी।)
   घ. कलीसिया की बढ़ौत्तरी में वर्तमान सिद्धान्त।

कक्षा #३:

I. कलीसिया की बढ़ौत्तरी: (जारी।)
   ङ. बढ़ौत्तरी करने वाली कलीसियाओं में पायी जाने वाली सर्वाधिक सामान्य विशेषताएं।[१]
   च. किन चीज़ों की वजह से कलीसिया में बढ़ौतरी होती हैं?
      क. एक कलीसिया की बढ़ौत्तरी का उदारहण।

कक्षा #४:

II. जागृति:
   क. कलीसिया की बढ़ौत्तरी का सबसे तीव्र तरीका जागृति है।

कक्षा #५:

II. जागृतिः (जारी।)
   ख. मरकुस ५:३५-४३ का अध्ययन।
      परीक्षा।

बढ़ौतरी और जागृति

टिप्पणियाँ -

कलीसिया की बढ़ौतरी और जागृतिः परीक्षा
सम्भावित २० सूत्रीय प्रश्न

१) "कलीसिया की बढ़ौतरी" को परिभाषित करें। (पृष्ठ १७०, १७१)।

२) दिखाएं कि किस प्रकार "कोशिका का विभाजन" पिछले द्वार से अन्दर आने वाली समस्याओं को समाधान हो सकती है (पृष्ठ १७६, १७९)।

३) कौन से तरीके या रास्ते हैं जिनके द्वारा जागृति प्राप्त होती है? (पृष्ठ १८५)।

सम्भावित १० सूत्रीय प्रश्न

१) तीन सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्यों को सूचीबद्ध करें जो प्रेरितों के काम के हमारे अध्ययन के अनुसार कलीसिया को प्रभावित करते हैं (पृष्ठ १७१, १७२)।

२) दो या तीन वाक्यों में, कलीसिया की बढ़ौतरी के "पिरामिड के सिद्धान्त" को परिभाषित करें। (पृष्ठ १७३, १७४)।

३) संक्षेप में "पिछले द्वार" के सिद्धान्त का परिभाषित तथा वर्णित करें (पृष्ठ १७५,१७६)।

४) वृद्धि करने वाली कलीसियाओं में पायी जाने वाली चार सबसे सामान्य विशेषताओं को सूचीबद्ध करें (पृष्ठ १८०, १८१)।

५) "जागृति" को परिभाषित करें (पृष्ठ १८३, १८४)।

६) एक ऐसी चीज़ का वर्णन करें जो जागृति के बाद होती है (पृष्ठ १८६)।

बढ़ौतरी और जागृति

टिप्पणियाँ -

I. भाग १: कलीसिया की वृद्धि

क. पाठ्यक्रम का परिचय।

१. कलीसिया रोपण, कलीसिया की वृद्धि के साथ साथ ठीक वैसे ही चलती है जैसे कि एक बच्चे का जन्म बच्चे के विकास के साथ साथ चलता है। पहले कलीसिया को रोपित किया जाता है। उसके बाद कलीसिया का वृद्धि होना आवश्यक होता है। अतः,इस पाठ्यक्रम का कलीसिया के रोपण पाठ्यक्रम के साथ पढ़ा जाना ज़रूरी है।

२. पाश्चात्य संस्कृति में, कलीसिया की वृद्धि का विषय एक विज्ञान बन गया है।

क. इसके कुछ फायदे हैं।

१) हम कुछ प्रचलनों को देख सकते हैं।

२) हम कलीसिया वृद्धि के कुछ सिद्धान्तों को विकसित करना प्रारम्भ कर सकते हैं।

३) हम कलीसिया की वृद्धि का अवलोकन तथा उसके लिए प्रमाणित तरीकों का इस्तेमाल कर सकते हैं।

ख. लेकिन, विज्ञान के रूप में कलीसिया की वृद्धि के कुछ नुकसान भी होते हैं।

१) हम कलीसिया की वृद्धि को एक विधी के रूप में देखने लगते हैं (अर्थात कुछ ऐसी कड़ी प्रक्रियाओं के समूह के रूप में जो आपको सफलता को निश्चय प्रदान करती है)।

२) कई बार कलीसिया आपको एक व्यापार के जैसे दिखने लगती है।

ग. कलीसिया की वृद्धि से सम्बन्धित शिक्षाएं प्रायः "विपणन या व्यापार" के सिद्धान्तों को कलीसिया की वृद्धि के लिए मुख्य उपायों के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

१) **सूची** - "सम्पूर्ण सभा" का विचार जिसमें कलीसिया की सभी प्रकार की सेवकाईयां शामिल होती हैं।

२) **गुणवत्ता** - विचार यह है कि उत्पादित वस्तु उत्तम होनी चाहिए।

३) **विज्ञापन करना** - कलीसिया का विज्ञापन करने के लिए संचार माध्यम का इस्तेमाल करना।

४) **सभा** - सदस्यों के आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बने तथा उन आवश्यकताओं को पूरा करें।

टिप्पणियाँ -

५) **उपलब्धता** - सभाएं लोगों के लिए सुविधाजनक समय में रखें।

६) **पार्किंग -** सुनिश्चित करें कि लोगों को अपने वाहनों को खड़ा करने में सुविधा हो।

७) **ईमानदारी**- आपकी बातों में हां का अर्थ हां हो और न का अर्थ हो। (आप जिन कामों को करने के लिए कहते हैं उन्हें अवश्य करें)।

घ. वास्तव में, ये सिद्धान्त या नियम कलीसिया की वृद्धि के लिए बहुत लाभदायक हो सकते हैं। लेकिन हमें कभी यह नहीं भूलना चाहिए कि कलीसिया कोई व्यापार नहीं है। इसलिए चलिए हम अपने अध्ययन को कुछ परिभाषाओं के साथ प्रारम्भ करें।

चर्चा विषय

अपनी संस्कृति में ऐसी कलीसियाएं बनाएं जो तेजी से बढ़ रहीं हों और जिन्होंने व्यापार के सिद्धान्तों को अपनाया हो? यदि ऐसा है, तो उसका कैसा प्रभाव पड़ा है?

ख. मुख्य परिभाषाएं।

१. कलीसिया ग्रीक के शब्द Ekklesia (इक्कलीसिया) से आता है।

क. Ekklesia (इक्कलीसिया) "Ek" ("एक") kaleo ("कालेओ") से आता है। इस शब्द का उपयोग सेना को एकत्रित करने के लिए किया जाता था।

ख. क्रिया "kaleo" ("कालेओ") का अर्थ "बुलाए हुए" है; और उपसर्ग "Ek" ("एक") का अर्थ है "बाहर"। इस तरह से Ekklesia (इक्कलीसिया) का अर्थ होता है "बाहर बुलाए गए लोग"।

ग. इसका अर्थ "सभा", "बैठक", या मण्डली भी होता है।

घ. इस तरह से, कलीसिया का अर्थ हमारी समझ के लिए "बुलाए हुए लोगों का एकत होना" होना चाहिए।

२. वृद्धि- का अर्थ विस्तार, फैलना, जोड़ना, और गुणन होना होता है।

क. मात्रात्मक - का अर्थ आकार या संख्या में बढ़ना होता है।

ख. गुणात्मक- का अर्थ चरित्र और आन्तरिक शक्ति में बढ़ना होता है।

ग. गुणक- का अर्थ पुनः उत्पन्न करने में बढ़न।

टिप्पणियाँ -

३. कलीसिया में वृद्धि- का अर्थ वृद्धि, विस्तार, या बुलाये हुए लोगों की बैठक में लोगों की संख्या में वृद्धि, या उन लोगों के चरित्र व आत्मिक जीवन में बढ़ौतरी होता है।

४. सबसे विशुद्ध प्रकार की बढ़ौतरी तब होती है जब गुणात्मक वृद्धि के कारण मात्रात्मक वृद्धि होती है।

क. इसका अभिप्राय है कि, मण्डली या समूह में पाये जाने वाले पहले से जुड़े हुए लोगों के जीवन में होने वाली स्वाभाविक उन्नति या बढ़ौत्तरी के परिणाम स्वरूप मण्डली में लोगों की संख्या बढ़ती है।

ख. यही नये नियम की कलीसिया में हुआ (प्रेरितों २:४६, ४७ क का परिणाम प्रेरितों के काम २:४७ ख)।

ग. प्रेरितों के काम की पुस्तक में कलीसिया में वृद्धि।

१. प्रेरितों के काम की पुस्तक में, हम नये नियम की कलीसिया में वृद्धि का विस्तृत वर्णन देखते हैं।

क. अनेकों बार हम "गिनती में बढ़ते गये" तथा "परमेश्वर का वचन सामर्थी ढंग से फैलता गया" जो कलीसिया की वृद्धि की ओर संकेत करता है।

ख. जब हम इन अनुच्छेदों को पढ़ते हैं, तब हमें वे विशेषताएं दिखाई देती हैं जिनके कारण कलीसिया में बढ़ौतरी हुई।

१) प्रेरितों के काम २:१-४१ (पद ४१) - सुसमाचार का प्रचार; अन्याभाषा; चिन्ह व चमत्कार।

२) प्रेरितों के काम २:४२-४७ (पद ४७) - शिक्षा पाना; संगति करना; रोटी तोड़ना; प्रार्थना; चिन्ह व चमत्कार; उदारता, समाज; स्तुति।

३) प्रेरितों के काम ५:१-१६ (पद १४) - साझा करना; न्याय; आत्मा के वरदान; चिन्ह व चमत्कार।

४) प्रेरितों के काम ६:१-१५ (पद १,७) - सताव, शिक्षा व प्रचार; संगठन; चिन्ह व चमत्कार।

५) प्रेरितों के काम ९:२८-३५ (पद ३१,३५) - सताव; प्रचार; चंगाई।

टिप्पणियाँ -

६) प्रेरितों के काम १२:१-२४ (पद २४) - सताव; चिन्ह व चमत्कार; न्याय।

७) प्रेरितों के काम १४:१-७ (पद १) - सताव, प्रचार; चिन्ह व चमत्कार।

८) प्रेरितों के काम १६:१-५ (पद ५) - शिक्षा; अगुवे।

९) प्रेरितों के काम १९:१-२० (पद २०) - आत्मा का बपतिस्मा; प्रचार; शिक्षाएं; चिन्ह व चमत्कार; न्याय।

२. आइये हम निम्नलिखित चार्ट को देखें (बांए हाथ के स्तम्भ में दी गयी संख्या उपरोक्त १-९ को संख्या को दिखाती है।

	प्रचार करना व शिक्षा देना	चिन्ह व चमत्कार	वरदान बप्तिस्मा	साझा करना उदारता	स्तुति रोटी तोडना	प्रार्थना	न्याय	सताव	अगुवे व क्रम
१	*	*	*						
२	*	*		*	*	*			
३		*	*	*			*		
४	*	*						*	*
५	*	*						*	
६		*					*	*	
७	*	*						*	
८	*								*
९	*	*	*				*		
	७	८	३	२	१	१	३	४	२

३. पहले किया गया अध्ययन कलीसिया की वृद्धि से जुड़े हुए अनेकों कारकों को दर्शाता है। विशेष करके, हम वहां पर निम्न बातों के महत्व को देखते हैं:

क. चिन्ह व चमत्कार (९ में से ८ वें मामले को देखें)।

ख. प्रचार करना व शिक्षा देना(९ में से ७वें मामले को देखें)

ग. सताव (९ में से ४ को देखें)।

घ. न्याय (९ में से ३ को देखें)

टिप्पणियाँ -

ङ. वरदान और आत्मा का बपतिस्मा (९ में से ३ को देखें)।

च. साझा करना और उदारता (९ में से २ को देखें)।

छ. अगुवे और संगठन (९ में से २ को देखें)

चर्चा विषय

कलीसिया की बढ़ौत्तरी कितनी महत्वपूर्ण है? क्या हम इसे हासिल करने के लिए मूल्य चुकाने के लिए तैयार हैं? क्या हम इच्छुक हैं, उदाहरण के लिए, क्या हम सताए जाने के लिए तैयार हैं? क्या हम साझा करने तथा उदारता का अभ्यास करने के लिए तैयार हैं? हर एक जन को कलीसिया की बढ़ौत्तरी चाहिए। लेकिन हर एक जन मूल्य चुकाने के लिए तैयार नहीं है। इन मुद्दों पर चर्चा करें।

घ. कलीसिया की बढ़ौत्तरी में वर्तमान सिद्धान्त।

१. पिरामिड सिद्धान्त।

क. जैसे जैसे कलीसिया की बढ़ौत्तरी होती है, अधिक अगुवों को तैयार व प्रशिक्षित करने की आवश्यकता पड़ती है।

ख. जब अधिक अगुवों को तैयार व प्रशिक्षित किया जाता है, तब कलीसिया की बढ़ौत्तरी होती है।

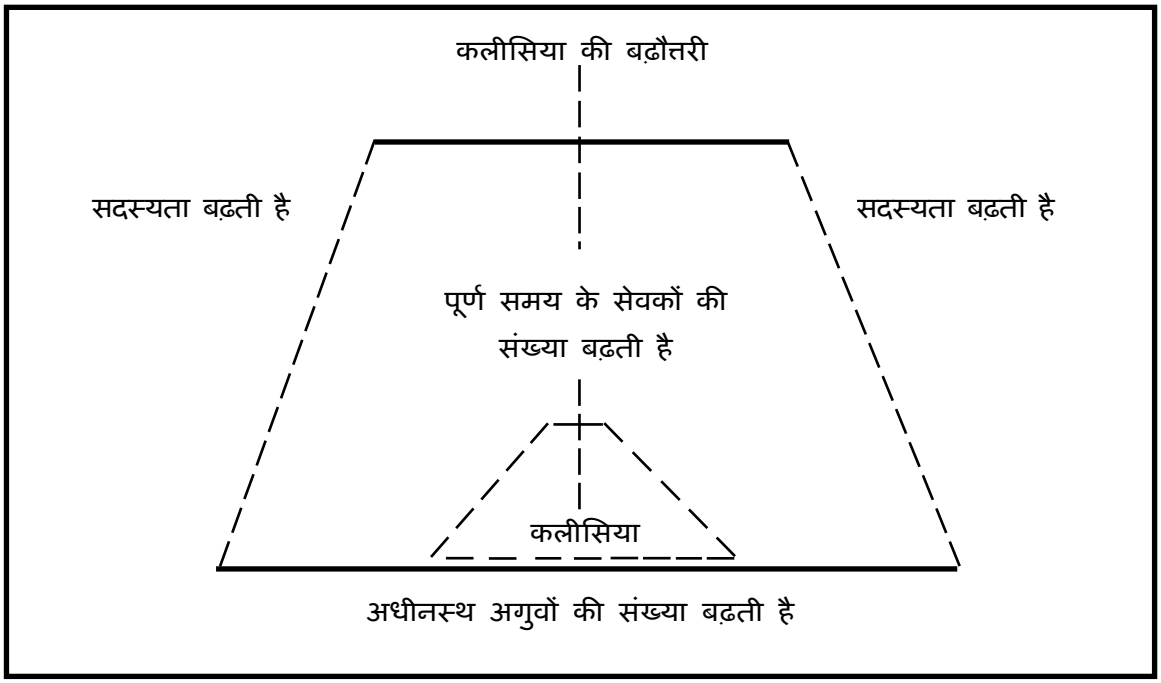

टिप्पणियाँ -

ग. बढ़ौत्तरी के लिए जगह तैयार करने के दो मुख्य तरीके होते हैं।

१) विस्तार का तरीका ("शाखा कलीसियाओं" का निर्माण करना)। उदाहरण के लिए जब कलीसिया में सदस्यों की संख्या ३०० हो जाती है तब किसी नये स्थान में कलीसिया को प्रारम्भ कर दिया जाता है। इस तरीके से आप एक अभियान की शुरूआत कर सकते हैं।

२) "विशाल कलीसिया" का तरीका (कलीसिया के कार्यकर्ताओं में पूर्ण समय के सेवकों को जोड़ देना)। उदाहरण के लिए, कलीसिया में जब भी १०० नये लोग जुड़ते हैं, कलीसिया अपने में एक पूर्ण समय के पासबान को जोड़ लेती है। यहां पर सोच यह है कि एक पासबान सारे लोगों को तैयार व प्रशिक्षित नहीं कर सकता है।

अपना उदहारण लिखें:

२. तैयार करने का सिद्धान्त। इफिसियों ४:१-१६ में, हम एक व्याख्या को देखते हैं कि एक कलीसिया (मसीह की देह) किस तरह से बढ़ेगी।

क. वरदानों के कार्यालयः प्रेरितों, भविष्द्वक्ताओं, प्रचारकों, पासबानों, शिक्षकों को निम्न कामों के लिए दिया गया हैः

१) उनके वरदानों को सेवकाई में उपयोग करना।

२) मसीह की देह को तैयार करने के लिए (विशेष तौर पर अपनी सेवकाई को दूसरों में उत्पन्न करने लिए)।

३) उदारहण के लिए, एक प्रचारक को प्रचार करना तथा दूसरों को प्रचार करने के लिए तैयार करना चाहिए।

टिप्पणियाँ -

ख. अनेकता में एकता – इफिसियों ४:१६, हम देह को अनेकता में एकता का अनुभव करते हुए बढ़ते देखते हैं।

१) केवल एक ही देह है (एकता)।

२) लेकिन, उस एक देह में बहुत से अंग होते हैं (अनेकता)।

३) देह को बढ़ने के लिए, देह के सभी अंगों को एक साथ मिलकर (अनेकता में एकता) कार्य करने के लिए इच्छुक होना और उन्हें अवसर दिया जाना चाहिए। निश्चय तौर पर इसका अर्थ है कि उन्हें तैयार होना चाहिए (१कुरिन्थियों १२:२१)।

अपना उदहारण लिखें:

३. "पिछले द्वार" का सिद्धान्त।

क. बहुत से लोग कलीसिया में तो आते हैं लेकिन बहुत लम्बे समय तक वहां बने नहीं रहते। किसी न किसी कारण वे "पिछले द्वार से गायब हो जाते हैं"। इसीलिए हम इस सिद्धान्त को पिछले द्वार का सिद्धान्त कहते हैं। जैसा कि नये लोगों के जुड़ने में अभाव के कारण ठीक वैसे ही कम होने या घटने के कारण भी बढ़ौत्तरी में रूकावट हो सकती है।

१) किस प्रकार से "पिछले द्वार से लोगों का जाना" होता है?

क) हो सकता है कि किसी व्यक्ति के कलीसिया के किसी अन्य जन से मतभेद हो गये हों या उसे उसकी बातों से ठोकर लगी हो।

ख) वह व्यक्ति कलीसिया के अन्य सदस्यों से या फिर स्वयं अपने आप से गुस्सा है।

ग) वह व्यक्ति आराधना सभा में आना बन्द कर देता है।

घ) वह व्यक्ति इस बात का इन्तज़ार करता है कि क्या किसी व्यक्ति को इस बात की परवाह है कि वह वहां से चला गया है।

टिप्पणियाँ -

ङ) वह व्यक्ति चला जाता है।

अपना उदहारण लिखें:

२) इस समस्या का समाधान क्या है? हम किस प्रकार से "पिछले द्वार" को बन्द करते हैं?

क) मित्रता-शोध से पता चला है आगन्तुकों के रूकने का मुख्य कारण दोस्ताना माहौल होता है (कलीसिया के बाहर बहुत से लोग कहते हैं कि कलीसिया में समाजिकता के भाव की कमी रहती है)।

ख) कोशिका का विभाजन- कई बार कलीसिया एक मुख्य समूह के लोगों के द्वारा नियन्त्रित की जाती है। समूह के ये प्रमुख लोग किसी दूसरे को समूह के भीतर प्रवेश नहीं करने देते। इसलिए अन्य लोगों के लिए वास्तव में कलीसिया का हिस्सा बनना कठिन हो जाता है। किसी भी कलीसिया में जागृति तब हो सकती है जब वहां के प्रमुख लोग कलीसिया में अपने स्थान को छोड़ने और यीशु को देने के लिए तैयार हों।

चर्चा विषय

निम्नलिखित आरेख का अध्ययन व उस पर चर्चा करें जो इस बात को दर्शाता है कि एक अद्भुत कलीसिया किस प्रकार लोगों को अपने में शामिल करती

टिप्पणियाँ -

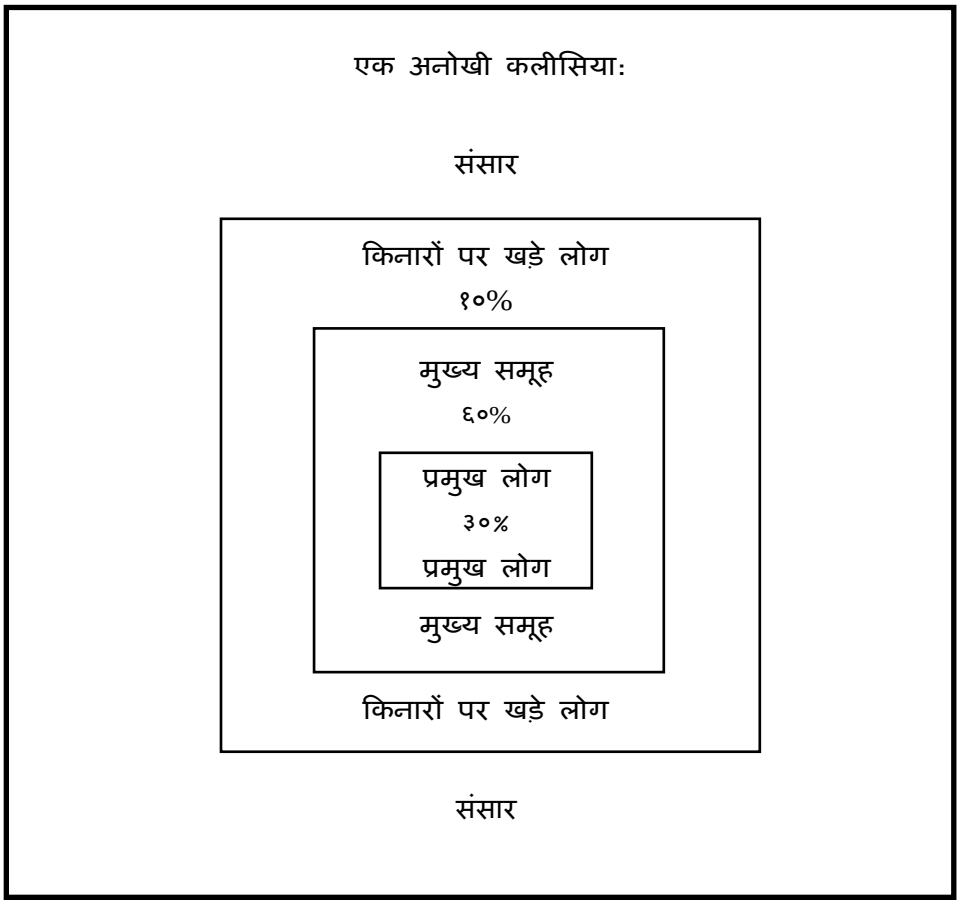

यहां पर विचार यह है कि औसतन कलीसियाओं में निम्न वर्ग शामिल होते है:

- एक प्रमुख समूह जो कलीसिया को नियन्त्रित करता है (३०%)
- लोगों का मुख्य समूह जो कलीसिया में आता तो है लेकिन कलीसिया की किसी भी गतिविधी में शामिल नहीं होता (६०%)।
- किनारों पर खड़े हुए लोगों का समूह जो केवल कलीसिया में आता और चला जाता है (१०%)।
- संसार।

टिप्पणियाँ -

३) कलीसिया की बढ़ौतरी की कुंजी सभी प्रकार के लोगों के समूहों को केन्द्र की ओर आगे बढ़ाना है।

क) मुख्य समूह, प्रमुख समूह में शामिल हो जाता है।

ख) किनारे पर खड़ा हुआ समूह मुख्य समूह में शामिल हो जाता है।

ग) संसार, किनारे पर खड़े हुए लोगों में शामिल हो जाता है।

४) ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका "घरेलू कोशिका समूहों" या संगति के समूहों को प्रारम्भ करना है।

क) दो या तीन मुख्य समूह के सदस्य, किनारे पर खड़े हुए लोगों के ७-१० लोगों की मेज़बानी कर सकते हैं।

ख) प्रमुख सदस्यों का समूह अन्य लोगों की कलीसिया के मुख्य गतिविधियों में भाग लेने में सहायता कर सकते हैं। वे दूसरों को ज़िम्मेदारी और अधिकार देने के द्वारा एक सेतू का काम कर सकते हैं।

चर्चा विषय

कोशिका कलीसियाओं या समूहों के उपयोग के लिए निम्नलिखित उदाहरणों का अध्ययन व उन पर चर्चा करें।

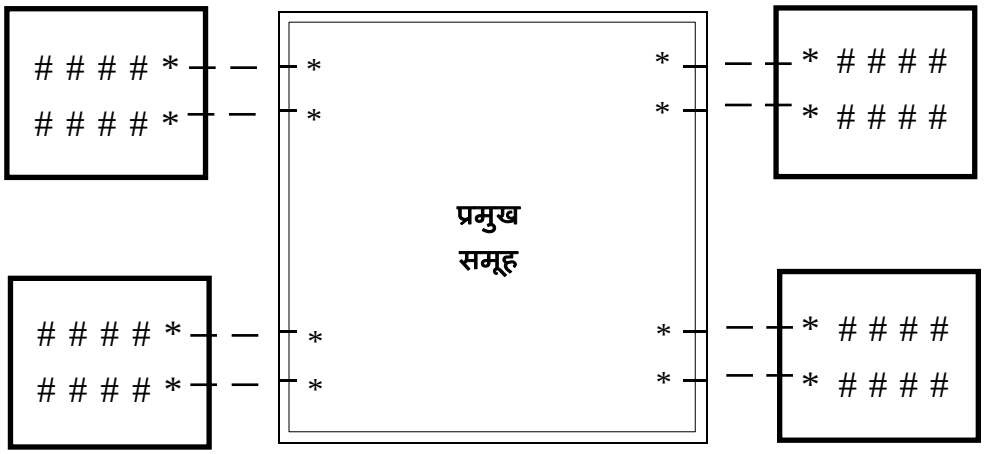

दिखाया गया *प्रमुख समूह के सदस्यों को प्रदर्शित करता है। #मुख्य समूह या किनारे पर खड़े लोगों के समूह को दर्शाता है। प्रमुख समूह के सदस्य अपने समूहों को छोड़कर नये कोशिका कलीसियाओं की अगुवाई करने के लिए आगे बढ़ते हैं। इस तरह से वे दूसरों के लिए सेतू के रूप में कार्य करते हैं।

टिप्पणियाँ -

ग) यहां पर कुंजी प्रमुख समूह को विखण्डित करके उसके पुराने सदस्यों को नयी घरेलू कलीसियाओं की अगुवाई करने का कार्य सौंप दें।

घ) इस प्रक्रिया के द्वारा कलीसिया का सम्बन्ध मज़बूत होता है। कलीसिया स्वस्थ्य होती है। जो लोग कलीसिया को छोड़ना चाहते हैं उनके पास वहां बने रहने का एक कारण होगा। वहां पर उसे एक रिश्ता मिलेगा। किसी कार्यक्रम को छोड़ना आसान कार्य है। लेकिन एक रिश्ते को छोड़ना मुश्किल होता है

अपना उदहारण लिखें:

५) पिछले द्वार से निकलने की समस्या का समाधान यह है कि उनके लिए पुलपिट का रास्ता खुला हो। कलीसिया के सदस्यों के बीच हमेशा समस्या होती है। कलीसिया के अगुवे को मेल मिलाप कराने की कोशिश करनी चाहिए। वह अवसर तब मिलता है जब कलीसिया प्रभु भोज खाने के लिए एक साथ मिलते हैं। याद रखें, समस्याएं गायब नहीं होती...बल्कि, समस्याओं को सुलझाया जाता है।

६) अगुवों को सर्वदा मेल मिलाप करवाने के लिए अवसर या माध्यमों को बनाने की कोशिश करना चाहिए। यह कार्य प्रायः संगति के द्वारा किया जा सकता है। जब लोगों को साथ मिलकर काम करना, साथ मिलकर सेवा करना, साथ भोजन करना, साथ खेलना पड़ता है, तो वे प्रायः अपने मतभेदों को दूर कर लेते हैं।

७) अफवाहों को अपने बीच में फैलने न दें। लगाए गये आरोपों को खुले में लाना बेहतर है।

८) अन्य स्थानीय कलीसियाओं के पासबानों के साथ मज़बूत रिश्ता बनाकर रखें। यदि काई सदस्य किसी कलीसिया के अन्य सदस्य के साथ अनसुलझी समस्या के कारण आपकी कलीसिया को छोड़ देता है, तब वह किसी अन्य स्थानीय कलीसिया में जा सकता है। स्थानीय कलीसिया के पासबानों को ऐसी "भटकी हुई" भेड़ों के अपने यहां आने पर दूसरे पासबान को सूचित करना चाहिए।

टिप्पणियाँ -

९) अन्त में आइये हम फिर से संगति और समाज के महत्वप पर ध्यान दें। लोग इसकी तलाश में हैं। कलीसिया इस बात का ध्यान रखे कि वह उपलब्ध हो। यदि हम उपलब्ध नहीं हैं तो बहुत से लोग हमेशा पिछले द्वार से जाते रहेगें।

चर्चा विषय

कलीसिया की बढ़ौतरी की "पिछले द्वार" की समस्या के सम्बन्धित प्रश्नों और टिप्पणियों पर चर्चा करें।

चर्चा विषय

निम्नलिखित बिन्दुओं में से प्रत्येक बिन्दु के लिए, चर्चा करें कि किसी प्रकार से यह विशेषता आपके माहौल या संस्कृति से मेल खाती है। क्या यह आपसे सम्बन्ध रखती है? क्या ये प्रभावशाली होंगे?

ङ. बढ़ने वाली कलीसियाओं में पायी जाने वाली सबसे सामान्य विशेषताएं।[१]

१. **बढ़ौतरी के लिए तैयार होना –** यह सिद्धान्त कहता है कि जब कलीसिया की इमारत का हिस्सा लोगों से भर जाता है, तभी बड़ी इमारत को बनाने का कार्य प्रारम्भ हो जाना चाहिए (यहां पर विचार बढ़ौत्तरी से एक कदम आगे चलने का है)।

२. **संरचनात्मक नवीनीकरण –** कलीसिया के संचालन व संरचना में लचीलापन होना चाहिये ताकि जब कलीसिया बदलावों में से होकर गुज़रे तो उनमें भी बदलाव किया जा सके।

३. **उप-मण्डली –** १०-२५ लोगों वाले कोशिका घरेलू समूहों का विद्यमान होना। ये समूह "छोटी कलीसियाओं" के रूप में कार्य करते हैं।

४. **सेवकाईयों में विविधता –** कलीसिया की सेवकाई में बहुत सी सेवकाईयां शामिल होती है (सुसमाचार प्रचार, दौरे करना, शिक्षा देना इत्यादि)। कलीसिया का प्रत्येक सदस्य किसी न किसी प्रकार की सेवकाई में भाग लेता है (या कम से कम हिस्सा लेने के लिए तैयार व प्रोत्साहित किया जाता है)।

५. **हर एक कार्य को निपुणता के साथ करना –** इसका अर्थ बहुतायत से धन खर्च करना ही नहीं है। चीज़ें निपुणता (ईमानदारी, समर्पण और ऊर्जा इत्यादि) के साथ बिना कोई पैसा खर्च किये हुए की जा सकती हैं। वास्तव में, कई बार श्रेष्ठता को खर्चीले कार्यक्रमों और उपकरणों को नाम दे दिया जाता है, जिससे चीज़ें देखने में अच्छी लगती हैं, लेकिन वे दिखावटी और बेकार होती है।

टिप्पणियाँ -

६. **व्यावहारिक बाइबल आधारित प्रचार व शिक्षा** – कलीसिया में प्रचार और शिक्षा की सेवकाई परमेश्वर के वचनों पर सकेन्द्रित होती है ताकि जीवन से जुड़ी समस्याओं के उत्तर प्रदान किये जा सकें।

७. **सभी आयु के लोगों के लिए सेवकाई** – बच्चों, जवानों और व्यस्कों की जरूरतें उनके लिए प्रदान की गयी सेवकाईयों के द्वारा पूरी हो जाती हैं।

८. **सच्ची सदस्यता-** वाचाएं लोगों के बीच में बांधी जाती हैं। कलीसिया कोई संस्था नहीं है। आप वहां पर कोई "पंजीकरण" नहीं कराते हैं। आप दूसरे लोगों से वचनबद्ध होते हैं। यह एक परिवार है।

९. **लोगों पर विशेष ध्यान देना** – लोग कार्यक्रमों से अधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

१०. **दृढ़ संकल्प** – कलीसिया अलग तरीके से कामों को करने के लिए इच्छुक होती है। यह रचनात्मक है। वह अनोखी व सबसे अलग होने के लिए तैयार है। उसमें अनोखी आत्मा होती है।

चर्चा विषय

निम्नलिखित बिन्दुओं में से प्रत्येक बिन्दु के लिए चर्चा करें कि किसी प्रकार से यह विशेषता आपके माहौल या संस्कृति से मेल खाती है।

च. किस वजह से एक कलीसिया में बढ़ौतरी होती है? (डॉ. लायल स्कालर के अनुसार)।[२]

१. कलीसिया पवित्र आत्मा की सेवकाई का अनुभव करती है। यह पवित्र आत्मा की सामर्थ और उसके बहाव को स्वीकार करने के लिए तैयार है।

२. लोगों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। कलीसिया द्वारा सेवा निभाना और सुसमाचार प्रचार किया जाना बहुत व्यक्तिगत मामला है।

३. कलीसिया का अपना दर्शन है। वह भविष्य की ओर देखती है।

४. लक्ष्यों को अच्छी तरह से परिभाषित किया जाता है। इस बात को लेकर कोई दुविधा नहीं होती है कि कलीसिया क्या करने जा रही है।

५. कलीसिया के सभी लोगों में आपसी सहयोग का बोध होता है। देह में सभी अंगों द्वारा समान तरीके से काम करने पर विशेष ज़ोर दिया जाता है।

६. कलीसिया का उद्देश्य उसके सदस्यों के द्वारा पहिचाना और समझा जाता है। यह अति स्पष्ट होता है।

टिप्पणियाँ -

७. कलीसिया के लोग एक दूसरे पर विश्वास करते हैं। लोग अगुवों पर भरोसा करते हैं। अगुवे लोगों पर भरोसा करते हैं।

क. अतः, लोग भाग लेने के लिए तैयार होते हैं।

ख. अतः, अगुवे लोगों को भाग लेने की अनुमति प्रदान करते हैं।

८. अगुवों में वृद्धि होती है। जिम्मेदारियां और अधिकार अन्य लोगों को दिया जाता है। नये अगुवों को तैयार किया जाता तथा उन्हें सेवा के लिए भेजा जाता है।

९. कलीसिया के सदस्य कलीसिया के लिए समर्पित होते हैं। वे एक दूसरे के लिए समर्पित होते हैं। उनके बीच में प्रतिबद्धता का गहन बोध होता है।

१०. प्रतिवर्ष नये सेवकाईयां और नये कार्यक्रम हो सकते हैं। जिन लोगों ने विश्वासयोग्यता के साथ अपनी सेवा को दिया है उन्हें सेवा से आराम दिया जाना चाहिए। नयी सेवकाईयों को प्रारम्भ करना चाहिए। कलीसिया उन कामों को कर रही है जिन्हें उसने पिछले वर्ष नहीं किया था।

एक कलीसिया की बढ़ौत्तरी का उदाहरणः

बहुत ही छोटे समय में वैन न्यूयस, कैलिफोर्निया (यू.एस.ए) में **द चर्च ऑन द वे** में लोगों की संख्या ३००० लोगों तक बढ़ गयी। कैसे?

पास्टर जैक हेफोर्ड कलीसिया की बढ़ौत्तरी के लिए निम्मलिखित नौ प्रमुख बिन्दुओं को बताते हैं।[३]

१. आराधना।

२. शिक्षा।

३. संगति।

४. देखभाल और तरस... संवेदनशील मुद्दों को छूना।

५. सुविधाओं और कलाओं को एक रचनात्मक इस्तेमाल (नाटक, संगीत, इत्यादि)।

६. सुसमाचार प्रचार करने वाली जीवन शैली (प्रतिदिन में किया जाने वाला सुसमाचार जिसके अन्तर्गत आप अपने सम्पर्क में आये लोगों को साक्षी देते हैं)।

७. घरेलू समूह।

८. एकता।

९. स्पष्ट तौर पर परिभाषित क्षेत्र के लिए समर्पित व संकेन्द्रित।

टिप्पणियाँ -

अपना उदहारण लिखें:

II. जागृति।

क. कलीसिया के बढ़ने का सबसे तीव्र व प्रभावशाली ढंग से बढ़ने का तरीका जागृति

लेखक की टिप्पणीः

जागृति के अध्ययन करने के बहुत से तरीके हैं। इस पाठ्यक्रम के अन्त में, हम जागृति का अध्ययन एक अनोखे तरीके से करेगें। हम लोग सुसमाचारों की उस घटना को देखेगें जब किसी व्यक्ति को पुनः जीवन(पुर्नजीवन) प्राप्त होता है। हम शारीरिक तौर पर पुनः जीवन पाने की घटना का अध्ययन करते हुए आत्मिक जागृति का अध्ययन करेंगें। लेकिन, हम इस तरीके से जागृति के सिद्धान्तों को तैयार कर सकते हैं।

१. जागृति क्या है?

क. शब्दकोष में दी गयी जागृति की परिभाषाः फिर से जी उठना, किसी ऐसी चीज़ को होश आ जाना या पुनः जीवन मिल जाना जो पूर्णतः या स्थायी तौर पर जीवन रहित न हो।

१) ध्यान को केन्द्र, कलीसिया से बाहर के लोग हो सकते हैं।

क) इस तरह से देखें तो, जागृति का अर्थ शैतान के राज्य को लूट लेना है।

ख) योना की पुस्तक हमें एक अच्छा उदाहरण देती है। मूर्तिपूजकों के शहर निनवे ने एक महान जागृति का अनुभव किया।

टिप्पणियाँ -

२) कलीसिया के भीतर पाये जाने वाले लोगों पर ध्यान केन्द्रित किया जा सकता है।

क) इस बोध में, जागृति का अर्थ, "घर का पुनः निर्माण करना है"।

ख) एज्रा की पुस्तक हमें एक अच्छा उदाहरण प्रदान करती है। एज्रा इस्राएल के लोगों की जाग्रति में अगुवाई करते हैं।

ख. जागृति तब होती है, जब निष्क्रियता के दौर के बाद, कलीसिया धार्मिकता के लिए भूखी और प्यासी हो जाती है (मत्ती ५:६)।

१) व्यक्तिगत धार्मिकता के लिए भूख (व्यक्तिगत जागृति)।

२) दूसरों में धार्मिकता की भूख (सुसमाचार प्रचार सम्बन्धी जागृति)।

३) समाज में धार्मिकता की भूख (सामाजिक जागृति)।

ग. जागृति का अर्थ होता है जागना। कोई जन पहले नींद में था लेकिन अब वह जाग गया है (देखें यूहन्ना ११:११; मरकुस ५:३९,४२)। इसका अभिप्राय यह है कि, जागृति का अर्थ यीशु की महिमा को देखना है (देखें लूका ९:३२; इसके अलावा यूहन्ना ११:४० को देखें)।

२. जागृति का उद्देश्य क्या होता है? परमेश्वर को महिमा देना (देखें यूहन्ना ११:४)।

३. जागृति के लिए क्या शर्तें होती है?

क. कलीसिया की जागृति की एक शर्त यह है कि हमें इस बात का अहसास होना चाहिए कि हमें परमेश्वर की ज़रूरत है। यह कुछ ऐसा है कि हमें एक विशाल पत्थर दिखाई दे रहा हो जिसे हटाना हमारे लिए कठिन हो। यदि हम सोचते हैं कि हम ही सारे काम कर सकते हैं तो वहां जागृति नहीं हो सकती है। हमें कब्र के ऊपर उस विशाल पत्थर को देखना जरूरी है जिसे हटाना हमारे लिए असम्भव कार्य है (मरकुस १६:४)।

ख. हम कह सकते हैं कि जागृति के लिए दूसरी शर्त आज्ञाकारिता है। लूका ६:४६-४९ का अध्ययन करें और याद रखें कि जागृति का अर्थ "घर का पुनः निर्माण करना" है। इस गद्यांश में दिये गये दो घर बनाने वाले व्यक्तियों के बीच में क्या अन्तर है" उनमें से एक आज्ञाकारी था और दूसरा नहीं था। एक ने वचन के अनुसार कार्य किया और दूसरे ने वचन का पालन नहीं किया (आज्ञाकारिता व अनाज्ञाकारिता)। इस तरह हम कह सकते हैं कि जागृति की दूसरी शर्त आज्ञाकारिता है।

टिप्पणियाँ -

४. जागृति से पहले क्या आता है?

क. जागृति से पहले तरस आता है (लूका ७:११-१५को देखें और पद १३ पर ध्यान दें इसके अलावा यूहन्ना ११:३५ को देखें)।

ख. गलील में एक जागृति थी। यहां पर हम देख सकते हैं कि जागृति से पहले चिन्ह व चमत्कार होते हैं (देखें मत्ती ४:२३-२५)।

ग. यह कलीसिया के इतिहास की गवाही है कि जागृति से पहले प्रार्थना और आत्मिक युद्ध जरूर होना प्रारम्भ हो गये थे। दूसरे शब्दों में कहें तो, परमेश्वर जागृति भेजने से पहले अपने लोगों को इस्तेमाल करते हैं।

१) लाजर के पुनः जी उठने से पहले यह भी सत्य है। यीशु ने कहाः "पत्थर को हटा दो।" उन्होंने ने उन लोगों को इस्तेमाल किया।

२) वास्तव में मैं विश्वास करता हूं कि यह इस बात का प्रतीक है कि जागृति से पहले आत्मिक युद्ध होता है (यूहन्ना ११:३९-४१ का अध्ययन करें; इसके अलावा इस बात पर भी ध्यान दें कि किस प्रकार से विश्वास इन सारी बातों से जुड़ा है)।

५. किन तरीकों से जागृति मिलती है?

क. हमने पहले ही लूका ६:४६-४९ के अपने अध्ययन में देखा है कि, जागृति पाने का एक तरीका आज्ञाकारिता है।

ख. हम यह कह सकते हैं कि जीवन प्राप्त करना ही जागृति है। अतः, जीवन प्राप्त करने का एक तरीका यीशु के लिए अपने प्राण देना है (मत्ती १०:३९)।

ग. हमने यह भी कहा कि जागृति का अर्थ शैतान के राज्य को लूट लेना भी है। यह कैसे किया जाता है?

१) सबसे पहले उसे बांधना जरूरी है। यहां एक बार फिर से, मैं विश्वास करता हूं कि हम आत्मिक युद्ध को जागृति प्राप्त करने के एक सिद्धान्त के रूप में देखते हैं।

२) शैतान को बांधना आत्मिक युद्ध करना है। "और उसके वह उसके घर को लूट लेगा।" (मत्ती १२:२९ का अध्ययन करें)।

घ. अन्त में, आइये हम फिर से इस सिद्धान्त को दोहराएं कि तरस एक ऐसा घटक है जिससे हमें जागृती प्राप्त होती है (लूका ७:१३; यूहन्ना ११:३५)।

टिप्पणियाँ -

६. जागृति के बाद क्या होता है?

क. आज्ञाकारिता से जागृति प्राप्त होती हैं। यह जागृति का परिणाम भी होता है। एक तरीके से देखें तो, युसुफ पनुर्जीवित हो गया। जिसके परिणाम स्वरूप उसने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया (मत्ती १:२४ को देखें)।

ख. जागृति के परिणाम स्वरूप लोगों को आज़ादी मिलती है। मृत्यु की पटटी खुल जाती है (यूहन्ना ११:४४) का अध्ययन करें। यह भी देखना महत्वपूर्ण है कि यीशु जागृति के परिणाम में लोगों का इस्तेमाल भी करते हैं। जिस तरह से उन्होंने कहा, "पत्थर को हटा दो", उन्होंने यह भी कहा कि, "उसकी पट्टियां खोल दो"।

लेखक की टिप्पणीः

क्या आपको लूका ९:३२ में "जागृति" याद है? पतरस, यूहन्ना और याकूब सचेत हो गये और उन्होंने यीशु की महिमा देखी। कितनी सुन्दर बात है। लेकिन अगले ही पद को पढ़ें। उस क्षण की उत्तेजना में पतरस को "यह ध्यान नहीं रहा कि वह क्या कह रहा है" और उसने मूसा और एलिय्याह की आराधना करने का प्रयास किया। यह सब जागृति का ही परिणाम था।

कलीसिया के इतिहास की गवाही एक ही जैसी बनी रही है। बहुत सी बार पंथों का निर्माण जागृतियों के तुरन्त बाद हो गया।

उदारहण के लिए, १८०० के प्रारम्भ में हुई जागृति के तुरन्त बाद मोर्मोन कलीसिया का आरम्भ हुआ। मनुष्य परमेश्वर की महिमा से परिपूर्ण है। इस आत्मिक नशे के साथ साथ यीशु के अलावा अन्य लोगों के प्रति मोह भी आ जाता है।

यही सब लूका ९:३३ में पतरस के साथ हुआ। जागृति के साथ एक खतरा यह होता है कि जो स्थान जागृति के द्वारा खाली होता है उस स्थान को पंथ भर सकते हैं। लेकिन, परमेश्वर की इच्छा यह है कि जागृति का परिणाम केवल यीशु की महिमा हो! (लूका ९:२८-३६ का अध्ययन करें)!

टिप्पणियाँ -

ख. मरकुस ५:३५-४३ का अध्ययन।

लेखक का उदाहरण:

मरकुस ५:३५-४३ में उन सिद्धान्तों में से अनेकों सिद्धान्त पाए जाते हैं जिन्हें हमने खण्ड १ के अपने अध्ययन में देखा था। पद ३९ में हम कुछ ऐसा देखते हैं जो जागृति की परिभाषा से सम्बन्धित है। यीशु कहते हैं, "बच्ची मरी नहीं है, वरन सो रही है"। जिसका अर्थ यह है कि उसे उठाए जाने की जरूरत है। उसे सचेत करने की जरूरत है। जो प्रश्न यीशु इस "परिभाषा" से पहले पूछते हैं वह आज कलीसिया के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यीशु पूछते हैं, "तुम क्यों हल्ला मचाते और रोते हो?" इस साशय यह है कि एक समाधान है।

आज संसार के बहुत से स्थानों में कलीसिया सोई हुई है। हम इस को लेकर रोते हैं। लोग इसको लेकर हल्ला मचाते हैं। लेकिन यीशु के पास समाधान है। जागृति एक समाधान है। हमें क्या करना चाहिए? इस बात का उत्तर प्राप्त करने के लिए हमें आइये हम इस अनुच्छेद को पढ़ें। हम यहां पर पाएंगे कि हमें लड़ने की जरूरत है। हमारे भीतर विश्वास होना चाहिए। हमें इसे महसूस करना चाहिए। हमें इसे खिलाना चाहिए।

१. हमें लड़ना चाहिए (मरकुस ५:३५)।

क. पद ३५ में, हम जागृति के लिए आत्मिक युद्ध की ज़रूरत को देखते हैं। प्रारम्भ से ही यह एक लड़ाई थी। शैतान जागृति आने से पहले ही उसे समाप्त करने की कोशिश करता है। हम यहां पर शैतान की आत्मा को कार्य करते हुए देखते हैं:

ख. हस्तक्षेप पर ध्यान दीजिए ("जब वह बोल रहा था") - शैतान बहुत ढीठ है।

ग. वहां झूठ पर ध्यान दीजिए ("तेरी बेटी मर गयी है") - इसका साशय यह है कि अब कुछ नहीं हो सकता। शैतान झूठा है।

२. हमें विश्वास करना चाहिए (मरकुस ५:३६-३७)।

क. जैसा कि हम यूहन्ना ११:४० में भी देखते हैं कि, जागृति के लिए विश्वास भी बहुत जरूरी है। यीशु ने कहा, "केवल विश्वास कर"। यह उस अविश्वास के विपरीत है जो हमें मरकुस ६:६ में देखने को मिलता है। वहां पर कोई जागृति नहीं थी।

ख. हम विश्वास की ज़रूरत को मरकुस ५:३७ में भी देख सकते हैं। यीशु ने विश्वास के माहौल को बनाया। उसने अपने साथ केवल उन लोगों को ही कमरे में आने दिया जो विश्वास करने वाले थे।

टिप्पणियाँ -

३. हमें महसूस करना चाहिए (मरकुस ५:४०, ४१)।

क. हम यहां पर तरस की बात कर रहे हैं। यीशु ने विश्वास करने वालों को अपने साथ लेकर उस स्थान में विश्वास के वातावरण को तैयार किया। इसके अलावा उसने अपने साथ उस बच्ची को प्रेम करने वाले लोगों को लेकर तरस के वातावरण को भी तैयार किया। जो कि उस बच्ची के माता व पिता थे।

ख. जब हम पढ़ते हैं, "वे उस स्थान पर गये जहां पर लड़की पड़ी थी। और उन्होंने उसके हाथ पकड़कर कहा..." तब हमें पता चलता है कि तरस किस तरह से कार्य करता है। यीशु ने उसका ख्याल किया। उन्होंने उसके हाथों को छुआ। और वह होश में आ गयी।

४. हमें खिलाना चाहिए (मरकुस ५:४३)।

क. इतने भावनात्मक व रोचक घटना के बाद, यीशु ने यह क्यों कहा "उसे कुछ खाने को दो।" निश्चय तौर पर यह यीशु की सेवा के व्यावहारिक तरीके को दिखाता है। लेकिन मैं विश्वास करता हूं कि यहां कुछ और विशेष व महत्वपूर्ण बात छुपी हुई है। जिस प्रकार से यदि किसी कोमा से बाहर आए व्यक्ति को कुछ खाने के लिए न दिया जाए तब भी वे मर जाएगें, जागृति आने के बाद भी यदि उसे शिक्षा और अनुशासन नहीं सिखाया जाएगा तब वह व्यक्ति आत्मिक तौर पर मर जाएगा।

ख. हो सकता है कि, इस भी बुरा हो, क्योंकि जागृति प्राप्त करने के बाद यदि शिक्षा प्रदान नहीं की जाती है तो वह एक पंथ का निर्माण कर लेती है। जब लोगों को भूख लगी होती है तब वे ध्यान नहीं देते कि वे किस प्रकार का भोजन खा रहे है। यदि हम जागृति को भोजन नहीं खिलाएंगे, तो कोई और उन्हें खिलाएगा।

लेखक की टिप्पणीः

एक बार फिर से, हमें इस प्रकार के बाइबल अध्ययन से सावधान रहना चाहिए। हमें शारीरिक और आत्मिक के बीच के सम्बन्ध को अधिक खींचना नहीं चाहिए। वरन, मैं विश्वास करता हूं कि इस अध्ययन से हम सिद्धान्तों की रचना कर सकते हैं। अब हम उन्हें अपने जीवन में लागू कर सकते हैं। यदि हम उन्हें ठीक ढंग से लागू करते हैं, तो हम अपने व्यक्तिगत जीवन में बढ़ौतरी को जरूर देख पाएंगे। हम कलीसिया में बढ़ौत्तरी को देख पाएंगे। हम मसीही विश्वास में बढ़ौतरी को देख पाएंगे। परमेश्वर इन सभी चीज़ों को चाहते हैं। परमेश्वर जागृति को चाहते हैं। परमेश्वर कलीसिया की बढ़ौत्तरी को चाहते हैं। लेकिन, परमेश्वर ने इसे प्राप्त करने के लिए हमें चुना है। क्या परमेश्वर कलीसिया की बढ़ौत्तरी आर जागृति के लिए आपको इस्तेमाल कर रहे हैं।

बढ़ौतरी और जागृति

कलीसिया की बढ़ौत्तरी एवं जागृतिः परीक्षा।

टिप्पणियाँ -

[१]कक्षा की टिप्पणियां, "प्रिंसिपल्स ऑफ़ चर्च ग्रोथ" पाठ्यक्रम, रीजेंट यूनिवर्सिटी, डॉ. जोए उमीदी द्वारा दी गयी शिक्षा। इसे अनुमति द्वारा उपयोग में लाया गया है।

[२]लाइल स्कैलर, ग्रोइंग प्लान्स (नैशविले, टी.एन एबिंगटन प्रेस, ८८३)।

[३]क्लास नोट्स, डॉ. उमीदी द्वारा, "प्रिंसिपल्स ऑफ़ चर्च ग्रोथ" कोर्स, रीजेंट यूनिवर्सिटी, ८८। इसे अनुमति द्वारा उपयोग में लाया गया है।

बढ़ौतरी और जागृति

टिप्पणियाँ -